रसिक स्तवनावली.

सरवे जैन बंधुओने माटे

छपावी प्रसिद्ध करनार

झालोरवाला मुता लालचंद धनराजजी.

अमदावाद.

माणेकचोक आगल कागदीओलनी सामे

शा० हीराभाइ पुंजासाना मकानमां

“अमदावाद टाइम्स प्रेस”मां

कालीदास सांकलचंदे छापी.

संवत १९४२ सने १८८६

कीमत ०—२—६

२७३८

महा मुनीराज महाराज श्री
जीवना तारु राजेंद्रसूरिजीनां
बनावेलां स्तवनो.

श्रीनेमीश्वर भगवानने राजुल नारी वीनती करे छे तेनुं.

॥ प्रीयमित्रवीनाहोभाइ ॥ कुणंमोहब
तसाचवेआंही ॥ एदेशी ॥ विनगुनात
जीनेनारी॥ सखिनाहचल्योगिरनारी॥
आंकणी ॥ जानलइनेआयो ॥ क्युंएह
आंम्बरलायो ॥ इमरोतीराजुलप्या
री॥सखिनाहचल्योगिरनारी ॥वि० १॥
पशुदयारिदितुमेआणी॥ मुजमुखनीसु
णीनहींवाणी॥ पिउदयानहींएसारी ॥
सखिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि० २ ॥

मुजहियमोवहुइमफाटे ॥ विनदोसतजी
तिणमाटे॥ किसआगलकरुंपुकारी॥स
खिनाहचल्योगिरनारी ॥वि० ३ ॥ शि
वनारीनासुखनोभोगी ॥मुजछोडिथयो
तुंजोगी ॥ हुंपणदेखिशतेनारी ॥सखि
नाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ४ ॥ व्रत
धारीराजुलचाली ॥ शिवनारीनेनिजर
निहाली ॥ जनममरणदुखवारी ॥ स
खिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि० ५॥ गि
रनारउपरतजीकाया ॥ जिननेममुगती
पुरीपाया ॥ जाउंसूरिराजेंद्रबलिहारी
॥सखिनाहचल्योगिरनारी ॥ वि०६ ॥
इतिस्तवनं १॥



श्रीनेमीसर अरीहंतने राजुल नारी वीनती करेछे तेनुं॥

॥ प्राणनाथमित्रमाटेतो ॥ आपोछेत
मप्राण ॥ एदेशी ॥ स्नेहनछंमोनाह
ला ॥ नवलनवनोरेजेह ॥ अवगुणछेमुज
मांकिछयो॥ किमदाखोछोछेह॥ स्ने०१॥
शिवनारीवेश्याजीसी ॥ तेहथीराखोछो
प्रीत ॥ एहथिरेअवगुणशोबीजो ॥ अछे
लोकमांएविपरीत ॥ स्ने० २ ॥ हवेहुं
साथनाविछोमछयुं ॥ अवरनपतिधरुंकोय
॥ सोवनथालमूकिठीकरुं ॥ झालेमूर
खसोय ॥ स्ने० ३ ॥ इमकहीराजुल
नेमनो ॥ हाथधरावेरेशीस ॥ संजमपा
लीप्रीतिआकरुं ॥ शिवपुरपोतीजगी

श ॥ स्ने० ४ ॥ नेमगिरनारच्यांउपरे ॥
अणसणलहीसुखकार ॥ परण्याशिव
नारीपुरी॥सूरिराजेंउजयकार॥स्ने०५॥
इतिस्तवनं २ ॥

॥ श्रीनेमेसरदेवने राजुलनारी
वीनती करे छे तेनुं ॥

॥ अचानकच्याशोकोपकिनोकिरतार ॥
एदेसी ॥ करेप्रनुनेमजीशुं राजु
लपोकार ॥ तजोतमेस्यानेजुजने
प्रीतितोसंनाल ॥ मलेघणीएककोइ
सजनअजाण ॥ जुलेनथीप्रेमते तमो
तोसुजाण ॥ क०१ ॥ हिवेमाहरेकुण
इह लोकमांसगो ॥ दीउस्यानेनारीने
पिउ एटलोदगो ॥ कहेइमतोफिहार

माथानालटा ॥ सखीपिणरोतीजुवेते
हलीबटा ॥ क० २ ॥ रटेपिउपिउमु
खशुं धरामेंढली ॥ जलविणजाणे
ज्युंलुटे पमीमाछली ॥ अचानकचेत
आव्यो कोनकयुंमरी ॥ उठीनेक
हेहुंतो जावइथुंपरी ॥ क० ३ ॥ इस्यों
उढप्रेमजाणी आणीनेमदया ॥ सुखे
मलीमुक्तिमेंकरि राजुलमया ॥ सरेस
हुकाजमिले॥ संगतीजली॥ वंदतसूरि
राजेंद्र॥ संपदामली ॥क०४॥ इति ३॥

॥ श्री शांतीनाथ भगवानना
गुणग्रामनुं ॥

॥दयालुदेव कृपालुतुं ॥ नमुंछुहस्त जो
डीहुं ॥ एदेसी॥ जिनेंदशांति दयालुतुं॥

अजुहुंचित्त धारीहुं॥करीमेंआश हवेतोरी
॥अवोकीफिरि दोठोरी ॥ जि० १ ॥ तुमे
छोनाथ कृपावंत॥ हरीपारेव कीचिंता॥
मृगीनोरोग तुमेटाल्यो॥ अजोजिनधर्म
उजवाल्युं ॥ जि० २ ॥ हजीतुंदेव करे
शांति ॥ जपेजोनाम एकांति॥ नहींको
आस मुजेदूजी ॥ रहुंतोचरण नेपूजी॥
जी० ३॥ लहीहेजिन तुमोसेवा॥ नहीं
कोओर मुजेदेवा ॥ कर्योअवनृत्य तुमो
आगुं ॥ खरीहुंरीझ अबमागुं ॥ जि०
४ ॥ रीझ्यातोमुक्ति प्रभुदीजे ॥ खि
ज्यातोनृत्य वरजीजे॥ सूरिराजेंद्र कृपा
लुतुं ॥ नमुंहुंहरख जोमीहुं ॥ जि० ५॥
इतिशांतिस्तवनं ४ ॥

॥ श्री समकीत शुद्ध करवानुं ॥

॥ प्रियमित्रविनाहोजाई ॥ एदेशी ॥

समकित्तविनाहोजाई ॥ जीवरुलेगति
चउमांही ॥ इमकहेजिनेश्वरवाणी ॥ ज
विजीवदयादिलआणी ॥ विनसमकि
ततरोनजाई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही
॥१॥स०॥ तपजपक्रियासहुफोक॥ इम
जाखेतेसदगुरुलोक॥ तुमेशंकाकरोनव
कांइ॥ जीवरुलेगतिचउमांही॥२॥स०॥
बहुजीवदयानितपाली ॥ विणसरधा
गइसहुखाली ॥ तुमेतजोकुगुरुसंगजा
ई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही ॥३॥ स०॥
ब्रह्मचर्यजलीविधिपाल्यो ॥ वलिदोष
जूठपिणटाल्यो ॥नविआतमकरणीपाइ

॥ जीवरुलेगतिचउमांही ॥४॥ स०॥ प
रिग्रहनीममतामोभी ॥ घरच्यांलिंगअनं
ताकोभी॥ पिणगरजसरीनहींकांइ॥ जी
वरुलेगतिचउमांही ॥५॥स०॥त्रणकाल
करिजिनपूजा ॥ तिहांभावथयानहींदू
जा॥ पिणसरधासाचीनआइ॥ जीवरुले
गतिचउमांही ॥६॥स०॥ नणयोगुणयोस
हुघूल॥ जिमजाणेपलालनोपूल॥ एह
यातमांसुनसखाइ ॥ जीवरुलेगतिचउ
मांही ॥७॥स०॥ इमसूरिराजेंद्रप्रकाशे
॥नविसमकितनजोउलासे ॥ जिमहोवे
सिद्धिसगाई ॥ जीवरुलेगतिचउमांही
॥ ८ ॥स०॥ इतिपदं ५ ॥



॥सोलमा श्रीसांतीनाथ महाराजनुं॥

॥ त्रेवीसमा॥जिनेश्वरस्वामीजी ॥पुरे। मोरीआश ॥ ए देशी ॥ सोलमाशां तिजिनेश्वरस्वामी ॥ आशातारीधार ॥ हुंआव्योतुजआगले ॥ करोमाह रीसार ॥ १ ॥ वारअनंतानवमेंप्र भुजी ॥ कीधांमेंजेपाप ॥ तुंजाणेतेसर्व प्रकारे॥ जगन्नाथलोआप ॥२॥ आचिरा नंदनअरजीलीजे ॥ कीजेमुक्तिवास ॥ ठआशाएचेतनने ॥ अव्याबाधाविलास ॥३॥ देवअनेराससमरथनांही ॥देस्याविश्वेंसोधी॥ शुंसालंपटअवरनेतारे॥ आपेतेकिमबोधी ॥४॥ सूरीराजेंदरजीतुम आगल॥ करीवीनतीसार॥मेंगुणगाया

ताहरा ॥ उतारोभवपार ॥५॥ इति६॥

॥ श्रीसमकीत शुद्ध करवानुं ॥

॥ सुणोदीह्लीतरुतघरनार ॥ क्षत्रीक लंकाकिमलेइधेरे ॥ ए देशी ॥ सु णोभाविनर्मतजीसार ॥ श्रद्धाविणाकि मतरइयोरे ॥ भाखेजिनतुमाहितकार ॥ श्रद्धाविणाकिमतरइयोरे ॥ नथीफलत्रा पेतपजप ॥श्र०॥ जण्योतेहसर्वजाणोग प ॥ श्र०१ ॥ समकित्तविणानहींमुक्त ॥ श्र० ॥ लूणविनाजिमभुक्त ॥ श्र० ॥ तिमजाणोव्रतसहुफोक ॥श्र० ॥ इमभा खेसूरिजनलोक ॥श्र०२ ॥ मिटेनहीते नोभवफेर ॥ श्र०॥ जोवोसूत्रसिद्धांतजे हेर॥ सम्यक्तथीभवसंख्याहोय॥ आव

श्यकसूत्रलेज्योजोय॥ श्र०३ ॥ पंचाश
कन्नाखेविधिशुद्ध॥ धारोतुमोनिश्चेकरीबु
द्ध॥ राखोएकचित्ततेअर्हदेव ॥श्र०॥ क
रोमुक्तिनअर्थेसाचीशेव ॥श्र० ४ ॥ रा
खोमतखोटेगुरुधर्म ॥श्र०॥ जाणोनंद
तत्वतणोमर्म ॥श्र० ॥ वदेसूरिराजेन्द्रजी
साच ॥ मिथ्यामांहिरहोमतराच ॥ श्र०
५॥ इति ७ ॥

॥ श्रीसमकित्त शुद्ध करवानुं ॥

॥मुजरउपरगुजरीपितापादशाजाणी॥ ए
देशी॥समवसरणरचेदेव फुलविछावे ॥
सिंहासनत्रणकोट बनावेत्रावे॥ तिहांबे
शीमहावीरदेव वदेएवाणी॥नथीविनास
मकित्त तरेतुंप्राणी ॥१॥खरोधरोतजिन

में धर्मजिनवरको॥तजोकुगुरुकुदेव फंद
काफरको॥जिनसूत्रमांहींकह्योएम वात
एजाणी ॥नथी० २ ॥ करेनिरजराबहुक
ष्ट सहेजेतेह॥ विजयरायनेजेम संपदा
लेह॥मनवचकायकरीशुद्धधरेजप्राणी॥
नथी० ३॥ जिनदरिसणकरेनित्य भाव
नाभावे॥समकितथीवेशुद्ध मोक्षतेपावे॥
श्रमनाखेसूरिराजेंद्र सूननीवाणी॥नथी
विनासमकित तरेतुंप्राणी ॥४॥ इति०॥

॥ श्रीशांतिनाथ महाराजनुं ॥

॥ आदीजीनश्रंतरजामी ॥ ए देशी ॥

शांतिजिनसंपतकारी ॥ जगउपगारीदे
वारे॥ देखंतांदिलमुकरीजे ॥ सेवंतांशि
वसुखलीजे ॥शां० १॥ मोहनमूरतिसो

हेरे॥ भविजननांमनमोहेरे ॥ देवनएह
वोकोहे ॥ कर्मविदारणजोहे ॥ हुंसमकं
निततोहे॥ दीठांथीजाविबोहेरे ॥ शां०२
॥ विश्वसेनकुलचंदारे ॥ अचिरामात
आनंदारे॥ सेवेसुरनरइंदा ॥ कंचनवर
णसोहंदा॥ कापेभवभयफंदा॥ सोम्या
कारज्युंचंदारे ॥शां०३॥ चक्रवर्तपदपा
यारे॥ खटखंडनाप्रभुरायारे ॥ मृगलंछ
नसोहाया॥ मस्तकछत्रधराया॥ तीर्थप
आपकहाया ॥ मुक्तिसौधसिधायारे ॥
शां०४॥ नगरधोराजीआयारे ॥ दरस
णतुमचोपायारे॥ कारणकार्यदीपायो ॥
आनंदपर्मउपायो॥ मिथ्याभर्ममिटायो
॥ संवरअधिकसोहायोरे ॥शां०५॥ स

रिराजेंडादिलरंगेरे ॥ गुणगायानऊरंगेरे ॥ द्विचनऊनवइकचंगे ॥ कार्त्तिकमासऊमंगे॥ सुदिदशमीऊतंगे ॥ लगीलग्नजिनसंगेरे ॥शां० ६॥ इति ए ॥

॥ श्रीशांतिनाथ महाराजनुं ॥

॥ पीलेमेकोजामवालम ॥ पी० ॥ एदेशी ॥ सेवोशांतिस्वामसाहिब ॥ से० ॥ आंकणी ॥ सेवाथीसुखसंपजे ॥ जायसाविजंजाल ॥ देवनिरंजनसाचाजाणो ॥ गंमोआलपंपाल ॥साहिबसे० ॥ १ ॥ कानेकुंमलजलहले ॥ हियमेनवलखहार ॥ बांहिंबाजुबंधबहिरखा॥ मस्तकमुकटमनुहार॥सा०से० ॥२॥आंखमीअंबुजपांखमीजुं॥ मूरतिमोहनवेल

॥ विश्वसेनसुतवालिममोरो ॥ मुक्ति पुरिनोठेल ॥ सा० से०॥३ ॥ अंतरंग अनुजवकरोरे ॥ देखोदेवदयाल ॥मि थ्यातिमिरदलभंजणोरे ॥ विश्वमेंम हिमाविसाल ॥ सा० से० ४ ॥ धोरा जीनगेरधारियोरे ॥ सूरिराजेंद्रसुखका र ॥ दिनदिनअधिकीसंपदा ॥ संघमां जयजयकार ॥ सा० से०५॥ इति१०॥

॥ श्रीपार्श्वनाथ माहाराजनुं ॥

॥ दयालुदेव ॥ एदेशी ॥ अहो जिनपास प्रभावीतुं॥ करुंछुंआस तेरी हुं ॥ प्रभुतुंशुद्ध उपगारी ॥ दयातें नाग कीधारी ॥ अ० १॥ जोगीकमठ मदगाल्यो॥ जनोकोभर्म तेंटाल्यो॥ क

रोतिकष्ट मेघमाली॥कुदृष्टी ताहिकीवा
री ॥ अ० २ ॥ हरीजादव जरादूरे ॥
ममोवंछित तुंपूरे ॥ मिट्योएलग नृपरो
ग॥लहेसोधर्म संयोग ॥अ० ३॥ कर्या
उपगार तुमेभारी॥ लहेइयुंपार संसारी
॥अरागीदेव असंगीतुं ॥ कहुंशीख्यात
तेरीहुं ॥ अ० ४ ॥ हिवेहेनाथ कृपाकी
जे ॥ मुझेचारित्र सुखदीजे ॥ सूरिराजें
द्र जगत्राता॥ तुंहिहेस्वामी मोत्राता॥
अ० ॥ ५ ॥ इतिस्तवनं ११॥

श्री घोराजीमां अठाइ ओछव
थयो तेनुं ॥

॥ गोपीचंदलडका ॥ एदेशी ॥ सुण
सहिसहेली ॥ आजउछवबनियोरं

गसुं॥ श्राकणी ॥ आठदिवसअठाइम
होछव ॥ जिनपूजासुखकार॥ नगरधो
राजीमांहिनेजेकांइ॥ वरत्याजयजयका
ररे ॥ सु०१॥ हाथीघोमारथपालखी॥
वरघोमाबेवार ॥ वाजांविविधप्रकारनां
वाज्यां॥ मादलजुंगलताजरे ॥सु०॥२॥
मंमपमांमयो अतिहीमोटो ॥ मांमेस्वर्ग
शुंवाद ॥ परगटपासजिणंदबीराज्या॥
तज्याकुमतिउनमादरे ॥सु०॥३॥ उजम
णोवलीविसथानकनो॥ श्राविकाकानो
खंत॥ जवीकजीवकांइसमकीतपाम्या॥
धर्मजैनछेतंत ॥सु०॥४॥ समोवसरणकी
रचनाशोजे ॥ मनीजगामांही ॥ त्रीग
मबारपरखदाबीराजे॥ श्रानंदअधिक

उगाहूरे ॥ सु० ॥५॥ कार्तिकवदीपंचमी
मोनारी ॥ दिक्षाउब्वकीनो ॥ उगणी
सेंबताखीशवरशे ॥ संघेबहुजसलीनो
रे ॥सु० ॥६॥ वातकहुकेटलीबनावी ॥
दीठोतेहीजजाणे॥ सूरिराजेंद्रनीवाणी
साची॥ शंकाकोइनआणेरे ॥सु० ॥७॥
इतिअगाइपार्श्वस्तवनं १२ ॥

॥ श्रीसीधाचलजीनुं ॥

॥ नरतरिआताविचारिनेतमे करोहुंउप
रकोप ॥ एदेशी ॥ आदीश्वरत्रातापू
जोएमवी मिटेयुंनवसंताप ॥ जरामर
णटलेश तमेकरोशुद्धमनजाप॥ आदी०
॥१॥ जिननवाणुंवारर गिरिवरशत्रुंजे
आय ॥ तीरथआठ्यांथीथयो ॥ नवी

नेटंताकटेपाप ॥आदी० ॥२॥ बहुमुनि
संघाजाइ कठीणकर्मनेकाप ॥ मुक्तिना
रीआवासमांजइ पोताकरेसंलाप ॥
आ० ॥३॥ बहुअपराधिइ मयूरमाणिष
रसाप ॥ सूरिराजेंद्रनोसमरणकरतां ॥
बूटयाजवदवताप ॥आ०॥४॥इति १३॥

॥ अथ श्रीनेमेश्वर नगवाननुं ॥

॥ धिकयुवाधिकमुजने धिककामविका
रजी ॥ एदेशी ॥ धिकधिकआसंसारने
धिकमोहजंजालजी ॥ सगोरेनहींकोइ
जगतमां दीसेछेआलपंपालजी ॥ १ ॥
बेहीचाल्योरेनेममुजनणी ॥ एआंकणी
॥ केहनारेघरकेहनामालिया केनाछेमा
यनेबापजी॥ एकलोजनमेरेजीवजगतमां

दुरबुद्धिकरीपापजी ॥२॥ छो०॥ लक्ष्मी
चलप्राणचलछे चलेजोवननेकायजी
॥ मूरखथिरमानेअथिरने छोडिछोडिने
जायजी ॥३॥छो०॥ करमवश्यपेरेजीवनर
कमां ममताथीसहेमारजी॥ मारोमारो
रेकरीनेमरे कोइनचालेलारजी ॥ ४ ॥
छो० ॥ जीणघररमणीरेरामतकर्यां तेघ
ररानसमानजी ॥ गजघोडारेरथपाल
खी दीसेछेतीहांमसाणजी ॥५॥ छो० त्र
णखंडराजनेनविगण्यो छंडीरुपालीना
रजी ॥ कामजीतिरेसंजमआदर्यो धन
छेनमकुमारजी ॥६॥ छो०॥ धिकसुखतृ
ष्णारेपापणी वलगीकालअनंतजी ॥
साथनआवेरेकोइनारजा कुणकेहनोछे

कंतजी ॥७॥गो०॥ इमविलपंतीरेसंजम
आदरे जाणीअथिरसंसारजी ॥ राजु
लबुजव्योरथनेमने दीठिगुफागिरनार
जी ॥८॥गो०॥ चारित्रपालिरेअतिनिर
मलो सिद्धिसौधसिधायजी॥ सूरिराजें
द्रवंदेसिद्धने जोतिमांजोतिसमायजी ॥
९ ॥ गो० ॥ इतिस्तवनं १४॥

॥ श्रीनेमेसर भगवाननुं ॥

॥ गोपीचंदलमका ॥एदेशी ॥ मेरेप्यारे
नेमजीस्यानेगेमोरेमुजनेरोवती ॥ भोग
करमनोअंतहमारेअवसरलेस्यांजोग॥
हिवेतुंकालावालाकरीने क्युंवलगामेरो
ग ॥ मेरीराजुलप्यारी सहसावनमेहे
दिक्षाधारसां ॥१॥ नवभवनीतमेप्रीतने

तोमो मांमोहछअपार॥ तीर्थंकरसहुना
रीवरीने पाम्याभवनोपार॥२॥मे०ने०
॥ तीर्थंकरजेनोमीपरण्या तेहनोनहीं
खेरोप॥ क्षीणजोगीहुंस्यांनेकारण करुं
हिंसानोपोष ॥३॥ मे०रा० हिंसाथीभ
यपामोप्रभुजी तोमुजनेकिमगोमो ॥ वे
दनमाहरीनहींशुंजाणो छूटकेनेहनतो
मो ॥४॥ मे० ने०॥ नेहखरोतपजपनो
प्यारी उतारेभवपार ॥ अवरनेहसहु
जूठाजगमें जिनवरवचनवीचार ॥५ ॥
मे० रा० ॥ तोहिवेसंजमदेइमुजने आ
पोशिवपुरवास ॥ .माहरेतोपतिप्यारातु
मगो पुरोमननीआश ॥६॥ मे० ने० ॥
प्रथममुक्तिराजुलनेमेली दंपतीप्रेमप्र

माण॥ सूरिराजेंद्रए समरथ साहिब सेवो थइ सावधान ॥२॥ मे० रा०॥ इति १५॥

॥ श्रीअष्टापदजीनुं ॥

॥ आदिजिनस्वामी पुजाकरुआज ॥ एदेशी॥ आदीजिन वंदु अष्टापदे जाय ॥ भावना भावुं स्तवन बनावुं॥ आ०॥ आंकणी०॥ चक्रविसीध्यावुंने पापपखालुं॥ कुमतिटालुं धरमनिहालुं॥ आदी०॥१॥ मानमदगोडी करमने तोडु॥ भरमने मोडु चारित्र शुं जोडु॥ आदी०॥२॥ उपसमनीरे नवणकरावुं॥ सरधा बोलावुं फुलवीगावुं ॥ आदी०॥३॥ ध्यानबाहिरनुं धूपजगावुं ॥ प्रभुगुण गावुं केसर चढावुं ॥ आदी०॥४॥ तत्वत्रणाशिर मुगटदीपा

वुं॥ अंगीयांबनावुं शीलसुंनावुं ॥ आ
दी०॥५॥ अष्टशतगुणनी मालपहिरावुं
॥ज्ञानलयलावुं वाजीत्रवजावुं॥आ०॥६
॥सूरिराजेंद्रनुं समरणधारुं॥ अन्यसुर
वारुं सूत्रसंभारु ॥आ०॥७॥ इति१६॥

॥ श्रीशांतिनाथ अष्टाइ स्तवन ॥

॥ मोहनरासियोआयोवगीआमें ॥ ए
देशी ॥ आजउछवसखीधोराजीनगर
में ॥ मंगलमालारलीयरली ॥ आं
कणी ॥ एकशांतिजिननामसंभारे ॥
हुसरीसखीगावेमलीयमली॥१॥ आ०
आठदिवसप्रभुपुजारचावे॥ फुलचढावे
चुनिकलीयकली ॥२॥आ०॥ मंझपशो
भावरणिनजावे॥ नाचेसखीनीहांभली

यन्नली ॥३॥ आ० धर्मध्यानकीधूमम
चावे॥ आवेशुंसंपदाचलीयचली ॥४॥
आ०॥ सूरिराजेंद्रनांसूत्रसंनालो॥ न
रमजायेसबटलीयटली ॥ ५ ॥ आ०
॥इतिस्तवनं १७ ॥

॥श्रीशांतिनाथ अरिहंतनगवाननुं ॥
॥ इंग्रेजी वाजानी राह ॥

॥ आनंदकंदपूजतां ॥एदेशी ॥ समृद्धि
वृद्धिसिद्धिदे शर्मदशांतितुं२॥ स०॥ आं
कणी॥ तारतारपारवार रंकजंतहुं॥ तो
समुनतरसरण विरुदधारतुं ॥१॥स०॥
कर्मन्नर्मह्वांतधोत चंद्रकांतजुं ॥ रुपनुं
निधानकवण तुमारीसारीसुं ॥२॥ स०
॥ शांतदांतवीरधीर तंतसंततुं ॥ विश्व

नुंउद्धारकरण चक्रधारज्युं ॥३॥ स० ॥
क्रोधजोधमारमोह मुक्तिसंक्रमुं ॥ कीर
तिप्रबंधबहुत कथनपारलुं ॥४॥ स०॥
सूरिसूरिराजइंद चंदवंद्यतुं ॥ संवरस
माधीकरण नमततोयहुं ॥५ ॥ स० ॥
इतिस्तवनं १८ ॥

॥ श्रीतीरथवंदनानुं.॥

॥ मेरानेमालगानाजिनंदनसे ॥एदेशी
॥ मेनेधारलीयाजीनवंदनकुं हिंसाध
मसबगंमके ॥मे० ॥ आंकणी ॥ जिन
भाषितशुतजोधबनाया मिथ्याझुंमनि
कंदनकुं ॥हिं० ॥१॥मे० समकितसंवर
कोटकुंखंची डराकियासहुफंदनकुं॥हिं०
॥२॥ मे०॥ सिद्धाचललवलीआबुअष्टाप

द धुलेववंडुनाजिनंदनकु ॥हिं० ॥३॥ मे० ॥ अजीतनाथतारंगागिरिपर गीरनारनमुंजडुनंदनकुं ॥ हिं० ॥४॥ मे०॥ धोराजीनगरेशांतिजिनेसर वंडुडुरगतिखंमनकुं ॥हिं० ॥ ५ ॥ मे० ॥ संखेश्वरप्रनुपासनेपूजुं ॥ पुरमाबेवीरनिरंजनकुं ॥ हिं० ॥६॥ मे०॥ सूरिराजेंद्रनातीरथसरवे तारकछेनविवृंदनकुं ॥ हिं० ॥७॥ मे० ॥ इति १७ ॥



॥ श्रीसुमतीनाथ नगवाननुं ॥

॥ ललीतनीचालनीदेशी ॥ सुमतीनाथने वंदनाकरु सकलपापकुं टालीहुंपरुं॥ सुमतीदेसदा संपदाकरी वरजस्वामीमो

आपदापरी ॥१॥ अमरएकतुं नाथमाह
रे अजरअर्हंतुं व्याधिनेहरे अचलसिद्ध
तुं ब्रह्मरुपहे परमजोतीनो तुंस्वरुपहे॥२
॥सरवजाणगो दर्शीसरवना परमपूज्य
गो तीनलोकना ॥जगतपालहे भ्राततता
तज्युं गुणजिनेंद्रना पारस्युंलहुं॥३॥ ज
गतजोनिमां जनममेंलह्या प्रबलकष्टजे
मारनासह्या ॥ शरणताहरे आवीयोह
वे॥ करमवारतुं माहरांसवे॥४॥ तुजवि
नानको देवमाहरे अेघणानृत्य स्वामी
ताहरे ॥ नजतसूरिश जेंद्रनेबहु तदपि
ताहरो सेवनारहुं ॥५॥ इति २०॥

॥ श्री तीनथुइना सूत्रनी लावणी॥

॥ शांतिनाथनेसमरणकरीने कहुंपंचां

गीविस्तारी ॥ सूत्रनिर्युक्तिभाष्यनेचू
र्णी॥ टीकाजाणोहदभारी ॥ पंचांगीने
जोनहींमाने ॥ सोमिथ्यात्वीनिरधारी॥
तिनथुइकासूत्रबताउं जगमांवरतेसुख
कारी ॥१॥सा०॥ महानिशीथसूत्रमेंचा
रु सूत्रकहाहेजाहारी ॥ आवश्यककी
सरवपंचांगी [६]एकलेणासंभारी ॥ व्यव
हार[७]भाष्य[८]चूर्णीने[९]टीका॥ [१०]लघुचूर्णीलोजे
कारी॥वृहत्कल्पनोभाष्य[११]इग्यारमो वि
[१२]शेष[१३]चूर्णी[१४]टिकाकारी ॥२ ॥ सा०॥ आव
श्यक[१५]अवचूरीपनरे सोलमी[१६]दीपिकासा
धारी ॥ ऊत्तराध्यननी[१८]बेलघुवृत्ति [१९]पाइ

२०

वसूरीलोधारी ॥ ग्रंथवीसपंचांगीकेरा
प्रकरणदाखुहीतकारी ॥ अंगचूलिया
वंदणपयनो वर्धमानस्तुतिदेखारी ॥३॥
सा० ॥ पूजाचैत्यवंदनपंचाशक दोनुवृ
त्तीसहकारी ॥ श्राधविधिटिकानेभाषा
सार्धसतकमुलभाषारी ॥ प्रतिमाशतक
वृध्लघुवृत्ती शतपदीलोशंकावारी ॥
संदेहदोलाहलीहेतुआवस्यक श्राधदि
नकृतगाथारी ॥४॥ सा०॥ छत्रीशअधि
काग्रंथसखाइ पोथीदेखोपूरारी ॥ जैन
तत्वआदर्शपेखो चारसेसतरेपुठारी ॥
चैत्यवंदनएचैत्येहोवे पंचांगीठेऊपगारी
॥ आवस्यकविधिश्रीशुंग्रंथे भाखेजिन
जीजयकारी ॥५॥ सा०॥ श्रुतदेवीजिन

वाणीवरते वंदनकरतेगणधारी ॥ जग
बडनिशीथसूत्रमांदेखो शंकाकंखाकुटा
री ॥ आवस्यकनीदीपिकावरजे देवी
थुइथेसंकारी ॥ सूरिराजेंद्रजीआपनिरं
जन अन्यदेवहेअवतारी॥६॥इति३१॥

॥ पद ॥

॥ कुबजानेजादुमारा ॥एदेशी ॥ सदगु
रुनेबाणमारा मिथ्याजरमाविदारारे ॥
स०॥१॥ ब्रह्मएकबेलक्षणलक्षित द्रव्य
अनंतनिहारा॥ सर्वउपाधिसेवर्जिताशि
वहि विष्णुज्ञानवीस्तारारे ॥स० ॥२॥
ईश्वरसकलउपाधिनिवारी सिद्धअचल
अविकारा ॥ शिवशक्तिजिनवाणीसंजा
री॥ रुद्रहेकरमसंहारारारे ॥स०॥३॥ अ

ल्लाआतमञ्आपाहिदेखो ॥ रामआतमर
मनारा ॥ कर्मजीतजिनराजप्रकासे ॥
नयथीसकलवीचारारे ॥स०॥४॥स्याद
वादसरवांगीजाणो तीरथतारणहारा ॥
मोक्षसाधकतेसाधुसमजो सत्यबोलेमु
निधारारे ॥स० ॥५॥ शुभजोगेवरतेते
जोगी जतीइंद्रीजीतारा ॥ संवररक्षक
सोसंवेगी भगतजैनभजनारारे ॥स०॥
६॥ ग्रंथरहितनिग्रंथकहीजे फकीरफकि
रफकनारा ॥ ज्ञानवासमेंवसेसन्यासी
पंडितपापनिवारारे ॥स० ॥७॥ सतूचि
तूआनंदरुपनीवासी परमहंसपदवारा
॥ सूरिराजेंद्रसोकेवलीसचा आतमजा
सजारारे ॥स० ॥८॥ इति २९ ॥

॥ श्रीमहावीर नगवाननुं ॥

॥ गरबानीदेशी ॥ जिनवरअरजीगर
जीधारके मुजरोमानीयोरेलोल ॥जि०
वीरथश्रातुमधीरके केवलपामीउरेलो
ल ॥जि० ॥ उर्जअमावसमांहीके मुग
तीतुमेवरीरेलोल ॥जि०॥ दीपोछवकरे
लोकके हर्षरीदेधरीरेलोल ॥जि०॥१॥
गौतमतुमगणधारके प्रातरकेवलीरेलो
ल ॥जि०॥ जिनवरतुमविरहोनखमाय
के जलवीणमांछलीरेलोल ॥जि०॥ तु
ममुरतीश्राधारके देखीडुखहरुरेलोल॥
जि० ॥ राजगढेमाहाराजके दर्शसुहंक
रुरेलोल ॥जि०॥२॥ जोगजाणीजसखे
यकें मुगतीदीजीएरेलोल ॥जि०॥ धा

रीतुमधर्मध्यानके लहिरमेंरीजीएरेलो
ल ॥जि० ॥ स्नेहीनासीणगारके मुज
मनमेंवस्यारेलोल ॥जि० ॥ नहींधरुअ
वरनीआशके सुरतरुभेकिश्यारेलोल ॥
जि० ॥३॥ देशोजोमुजज्ञानके तुमघर
शुंघटेरेलोल ॥ जि० ॥ अमचाकरमक
ठोरके तुमबिणाकिमकटेरेलोल ॥ जि०
चारित्रमेंदिठाचंगके करजोमाहरोरेलो
ल ॥जि०॥ मानशुंमोटीमोजके त्रिशले
यतुंखरोरेलोल ॥ जि० ॥४॥ मिथ्याम
तिसवीमेटके समकीतसंवरुरेलोल ॥
जि०॥ कोईकपुन्यसंजोगकेजोगजम्यो
खरोरेलोल ॥जि०॥ करुणाकरीनेतार
के जीनजवजयजगेरेलोल ॥जि०॥ सू

रिराजेंद्रप्रसंगके जशजोतीजगेरेलोल
॥ जि० ॥५॥ इति २३ ॥

॥ श्रीसन्राजनोने शीखामण तथा
रजा लेवानुं ॥

॥ प्रेमसन्राजनो हवेराखजोतमो ॥ ए
देशी॥ सुणोनवीजनो हवेनावशुंश्रमो
॥ धर्मध्यानमनथी नमुकशोतमो श्रां
कणी॥ जैनजोगवारवार जगेजगेनथी
श्राज ॥ घणुंघणुंहुंएनेमाटे न्नांखुंछुंहीत
काज॥१॥सुण॥ रोषदोषसरवछोमी पा
लोजीवदया ॥ श्रमोउपरन्नलीरीते त
मोराखजोमया ॥२॥सुण॥ श्रद्धाशुद्धक
रोमोज ज्ञानध्यानसार ॥ मनुष्यजन
मपामीनेतमो पामशोनवपार ॥३॥सु०

॥ दिवसदिवसअधिकनेह राखीतेसुजा-
णं॥ नीचतणीप्रीतिखोटी करेतेधर्महा
ण ॥४॥ सु०॥ तानमानदेवपुजा करि
विविधप्रकार॥ जइइयुंहवेआवजोवली
हवणावाज्यागेबार ॥५॥सु०॥ भुलचुक
तालतोफ बोलेबोलआज ॥ मिछामि
डुक्कडंतेनेमाटे मागुंछुंजिनराज ॥६॥सु०
॥ *सूरिराजेंद्रसन्नाप्रेम राखज्योशुभ
भाव ॥ संसारपारपामवा जाणोआशु
नाव ॥७॥ सु० ॥ इति २४॥

॥ संसकृत ॥

॥ सूरीणांराजासूरिराजः तेषामिंद्रःसू
रिराजेंद्र ॥

---

*अर्थः सूरि कहेतां सामान्य जे आचार्य तेमना राजा गणधर ते गणधरना इंद्र तीर्थंकर तेहने सूरि राजेंद्र कहीए एटले सूरि राजेंद्र नाम तीर्थंकरनोछे एम जाणवुं ॥

॥ दुहा ॥

॥वीनतीअवधारोअमतणी॥सूरिराजेंद्र
महाराज ॥ श्रावकइछेघणुं ॥ दिक्षाम
होछवकाज ॥१॥ शिवगंजकेरेश्रावके॥
पुनमचंदमहासाज ॥ धोराजीनगरे
आवीया ॥ दीक्षालेवाकाज ॥ जगाम
नीसोहामणी॥ समोवसरणमनोहार॥
जिनप्रतिमापधरावीने ॥ दीक्षादीधी
सार ॥ चारठाणासोहामणा॥ सतावी
शगुणजाण ॥ पंचआचारनेपालता ॥
चित्तपरधरिजिनआण ॥ दीक्षालीधी
गलटघणी ॥ मनमांहरखनमाय ॥ सू
रिराजेंद्रपसायथी ॥ पातिकदूरपलाय
॥ त्रीकमवजेनागुणघणा ॥ केहतांना

आवेपार ॥ हुकमवजेगुणबोलतां ॥ ह इम्हेहरखअपार ॥ सुरिराजेंद्रशोभतुं ॥ धोराजीनगरमोझार ॥ समकीतआप्युं अतिभलुं ॥ उतार्याभवपार ॥

महाराज राजेंद्रसुरिजी श्रीजुनागढ पधारता वीनतीपत्र ॥

॥ दुहा ॥

॥ सूरिराजेंद्रकृपाकरी ॥ धोराजीनगर मोझार ॥ दरीशनवेहेलादीजीए॥ मन मांहरखअपार ॥ कृपाकरीपधारशो ॥ तरतआपमहाराज ॥ अमनेअलजो छेघणो ॥ मुखडुंजोवाकाज॥ वीनतमी अवधारीए सूरिराजेंद्रमहाराज ॥ अ मनेउलटअतिघणी॥ दरीशनजोवाका

ज ॥ आपअनेकगुणेभर्या ॥ सागरनी
रसमान ॥ तुच्छमतिछेअमतणी ॥ ल
खीनशकुंअजाण ॥

॥ स्नेहनछंडोनाहला ॥ एदेशी ॥
॥ सूरिराजेंद्रसोहामणा ॥ सतावीशगु
णजाण ॥ पंचआचारनेपालता ॥ पो
तेथइसावधान ॥सू० ॥१॥ दोषबेताली
सटालीने ॥ लेछेशुद्धआहार ॥ इरजासु
मतिशोधतां॥ टालेविषयविकार ॥सू०
॥२॥ त्रीकमवजेगुणशोभता ॥ मुनिगु
णमांभंडार ॥ हुकमवजेगुणअतिघणा॥
तीर्थविजयमनोहार ॥सू० ॥३॥ आरंभ
सौछकायना ॥ परहरीआमहाराज ॥
शुद्धमारगपरुपता ॥ वीचरेसोरठमोजा

र ॥शु० ॥४॥ वंदणाअवधारोअमतणी
मुनिवरमांशिरदार ॥ आशापूरोअमत
णी ॥ वंडुवारंवार ॥सू०॥५॥ चारचोर
नेवशकरी ॥ जीत्याकाठीआतेर ॥ वं
दणाएकहजारने॥ आठवारकरोमहेर॥

॥ चोपाई ॥

॥ नयरजीरणगढमोझार ॥ विचरेमुनी
गुणमांसिरदार ॥ सूरिराजेंद्ररसरयण
कूप ॥ प्रगटचोआरेपांचमेत्रूप ॥ १ ॥
ठेमीलचपचगठनीजाण ॥ रहेनिरंतर
एकजध्यान ॥ उचरावेसमकीतबहुमुल्य
॥ नहींकोईतेसमकीततुल्य ॥२॥ अर
जअमारीचित्तमांधरी ॥ दरशनदीउंत
मेकरुणाकरी ॥ बंदणाएकहजारआठ

वार॥ अवधारशोगुरुवारंवार ॥३॥ दर
शणवहेलांदेज्योसाहि अमनेबीजोआ
शानही॥ गुरुप्रसादेशुनसाविमले दुःख
दोहगसाविदूरेटले ॥४॥

॥आटलुं जोड्या बाद महाराज श्रीरा
जेंद्रसूरिजी वगेरे थाणा ४ आंही बी
राज्या तेथी सर्व श्रावको रामा जइ
गाममां पधरामणी करावी तेनी खु
शालीनी हकीकत ॥

॥ सूरिराजेंद्रजी पधारीयातमो॥ घणी
खुशीथीहर्षआज पामीआअमो ॥ शुद्ध
समकीत उचर्यांतेअमो ॥ बोधदेवाकार
णे पधारीआतमो॥ आजतोहरषछे अ
मनेघणो ॥ दरशनामीकरी खुशीथया

अमो॥ वीनतीकरीअमो जोमीएबेहाथ
॥स्वीकारशोकृपाकरी आपमहाराज॥
कामक्रोधमोहलोभ मायानेविकार॥
दुरकीधाजेणेतपथी राजेंद्रमहाराज॥
भुलचुकस्वामीखोम गातागुणगुरुराय॥
माफीसुधीरानेमाटे मागेआसभाय॥

॥ तथास्तु॥

॥ श्रीमल्लिजिन स्तवनो॥

॥ मल्लिजिनंदकादर्शकियामेने॥ जान
लिय॥जिनदर्शनकुं ॥मे०॥ एआंकणी॥
भोयणीनगरमांमूरतिसुंदर॥ तारणभ
विजनवृंदनकुं ॥मे०॥१॥ भूम्यंतरगत
मूरतिप्रगटी॥ कुमतितजेनक्युंफंदनकुं
॥मे०॥२॥ जाकोअतिशयजगतहिजाने

॥ आवतहेजविवंदनकुं ॥मे० ॥३॥ च
खुदयाणंउपमाजाकी ॥ मिथ्याजरम
निकंदनकुं ॥मे० ॥४॥ सूरिराजेंद्रजिनें
इकीप्रातिमा ॥ वंदवामुनिसुरइंदनकुं ॥
मे०॥५॥ इतिस्तवनं २५ ॥

॥ मोहतणीगतिमोटीहोमल्लिजिन मोह
तणीगतीमोटी ॥ बाहिरलोकमांमगन
तादिसे ॥ अंतरकपटकसाई ॥ जेखदे
खाम्हीजनजरमावे ॥ पुद्गलाजाकाजा
इहो ॥म०॥मो०॥१॥ जाकेउदयेपंम्हित
जनपिता॥ आगमअरथबिमोम्हे ॥ शि
वनारीनांसुखआतिसुंदर ॥ ठिनमांतेह
विखोम्हेहो ॥म० मो० ॥२॥ लागेलोक
प्रवाहमांमूरख ॥ जाखेजीतुंमोह ॥ ब

खतरबिनसंग्रामेनिश्चे ॥ गात्रभिन्नहोवे
जोहहो ॥म०मो०॥३॥ जिव्हारसलंप
टजशकीरती॥ वंछेजगतनीपूजा ॥ आ
शापासतजेजोजोगी ॥ जाकेनहींकहुंदु
जाहो ॥म०॥४॥मो०॥ जोयणीनगरेम
ल्लिजिननीं ॥ जात्राजुगतेकीनी ॥ सूरि
राजेंद्रसूत्रसंभालो॥ संवरसंगतिलीनी
हो ॥म०॥मो०॥५॥ इतिस्तवनं २६ ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवनं ॥

॥ केसेप्रभूपारसदरसणपावे ॥ एतोकु
गुरुमिथ्यात्वजमावे॥के०॥ एआंकणी०
शुद्धनहींजिहांजैनसमागम ॥ कहोकुण
रीतिजणावे ॥ तत्वरुचिविणकेसेपावे॥
स्वांगअनेकबनावे ॥के०॥१॥ राजपंथ

जिनआगमरीति ॥ तिनकूंदूरबतावे ॥
ऊजमपंथकुलिंगमिथ्यात्वी ॥ आपम
तेखलचावे ॥के० ॥२॥ सारथवाहनाहि
सुणसाहिब॥ तुमविनकोणकहावे ॥ सू
त्रतिहांराआपमतिमिल ॥ गच्छपरंपरा
गावे ॥के० ॥३॥ सूत्रागमश्रद्धानहींसा
ची ॥ मुखसेंसाचबतावे ॥ तिनकीमेंपर
तीतकरुंकिम ॥ करुणासिंधुकहावे ॥
के०॥४॥ कालअनंताजटकेजवमें ॥ दे
वद्रव्यकोइखावे ॥ जिनमंदिरघरजाण
रहेनित्य ॥ बोधबीजनहींपावे ॥के०॥५
॥ जगजीवनतुजमारगमोटो ॥ सदगु
रुसाचबतावे ॥ सूरिविजयराजेंद्रकृपा
थी ॥ प्रमोदरुचिपदपावे ॥ के० ॥६॥

इतिस्तवनं २७ ॥

॥ श्री ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ मतजारेपियातुजवारुंगी॥ एआंकणी
॥ वीकानेरमेंऋषभजिनेशर ॥ तिनकुं
जायपुकारुंगी ॥म०॥१॥ कालअनादि
परघररमीउ ॥ अबनेंनांललकारुंगी॥
म० ॥२॥ आत्मशिलसुरंगकीनूरकि ॥
अबतेरेसिरम्हारुंगी ॥ म० ॥३॥ ग्यान
ध्यानकीपीठीकरके ॥ मिथ्यामेलउता
रुंगी ॥म० ॥४॥ जिनशासनकेसरोवर
मांहि ॥ उपशमनीरझीलारुंगी ॥म०॥
५॥ शमदमखांतिशिलाकेउपर ॥ पाप
कीधोतीपछारुंगी ॥म० ॥६॥ शीलसुरं
गावागापेरो ॥ समकितपाघबंधारुंगी॥

मे०॥७॥ ज्ञानानंदीकेमहेलऊरोखे॥ अ
नुभवसहजरमारुंगी ॥म० ॥८॥ शुद्धचे
तनासखिसाथबेठाके ॥ संवरपंखाढारुं
गी॥म०॥९॥ अध्यातममतखोलाखेके॥
विवेकपुत्ररमारुंगी ॥म०॥१०॥ सूरिवि
जयराजेंद्रसनामें ॥ मुजराराजकहारुं
गी ॥म०११॥ धन्नमुनिजिनआणावहा
कें ॥ जगजसपम्हवजारुंगी ॥म०॥१२

॥ इतिफाग ॥

॥ केसरियाजीनुं ॥ राग धमाल ॥

॥ प्यारोकेसरीयो जोगजुगतेजुहारो ॥
प्यारो०॥ अनम्पहाम्हांबीचबीराज्यो ॥
सुरनरनांमनमोहेरे ॥प्या०॥१॥ च्यार
पहुरचोघमीआंवाजे ॥ मिथ्यामतिदिल

धूजेरे ॥प्या०॥ सिरपरमुगटजगचोहीराशुं ॥ करीआंगीसहुपूजेरे ॥प्या०॥२॥ केसरकीचकेबीचबीराजे ॥ कीरतिचिहुंदिशगाजेरे ॥प्या०॥ नामथकीनवनिधिपामे ॥ भूतव्यंतरभरभाजेरे ॥प्या०॥३॥ नामथापनाद्रव्यभावसुं ॥ नाभिराजसूतसेवोरे ॥प्या०॥ एहविनाडुजो नहींजगमें ॥ तरणतारणकोइदेवोरे ॥प्या०॥४॥ समकितलहीकरोजात्राएहनी ॥ ठेहरीकरीमनठामोरे ॥प्या०॥सूरिराजेंद्रतीरथभारूया ॥ सेवंताशिवसुखपामोरे ॥प्या०॥५॥ इति ॥

॥ वीरजिननुं स्तवनं ॥

॥ सुविहितशांतिजीपंदशोभागीरे ए

देशी ॥ शासनपतिवीराजिणंदारे ॥ मु
खशोभितपूनमचंदारे ॥ धनत्रिशलासु
तसुखकंदा ॥ सनेहीवीरजिब्बीप्यारीरे
॥ प्रभुराजगढेजयकारी ॥स०॥१॥ तुम
दरशनथीसुखथावेरे ॥ शुद्धसमकीतस
रधाआवरे ॥ मनवंछितफलवरपावे ॥
स०॥२॥ महिमात्रिहुविश्वविख्यातारे॥
सुरनरपतिमुनिवरध्यातारे॥ भेटयापर
तिखशिवसुखदाता ॥स० ॥३॥ जगता
रकछासातिहारीरे ॥ मनमोहननिश्चे
धारीरे ॥ अरजीलीज्योबिरुदसंभारी
॥स०॥ ४ ॥ जिनदरशनदायकस्वामी
रे॥ सूरिराजेंद्रपदविसरामीरे ॥ परमो
दरुचितुमपामी ॥ स०॥५॥ इति॥३०॥

॥ श्री धोराजी नगरमां श्रीतलजीननु
देरु छे तेनु स्तवन ॥

॥सीतलजिनसंगतीसारी॥ मुजनेलागे
प्यारीरे ॥ सहुकरोएहनीयारी ॥ एशि
वसुखनीदेनारी ॥ सीतल० ॥१ ॥ म
हावदीजाणुरे ॥ तीथिद्वादशीपरमाणुरे
जिनंदाजन्म्याप्यारा ॥ सहुनेलागेबहु
सारा ॥ शिवसुखनादेनारा ॥ आनंद
अधिकउछाहीरे ॥ सीतल० ॥ २ ॥
नंदाराणीमातरे ॥ दृढरथराजाताततरे ॥
नेवुंधनुषनीकाया ॥ न्हीलपुरीनोराया
॥श्रीवछलंछनपाया ॥ मायाकरतुंमारीरे
॥सीतल० ॥३॥ वरसलाखनुंआयुरे ॥
न्वीजननेतेसुहायुरे ॥ मागशरवदिसा

तमसारी ॥ दीक्षालीधीअतिप्यारी ॥
जशवध्योबहुनारी ॥ जैनहीतकारीरे
॥सीतल०॥४॥ तीनलोकनास्वामीरे ॥
हुंवंडुहुंसीरनामीरे ॥ सर्वज्ञपदधार्यो ॥
पोसवदीजाणो ॥ चतुरदशीपरीमाणो॥
वर्यांशिवनारीरे ॥सीतल०॥५॥ हेतुपर
मेशररे ॥ करोउपकारमुजमेररे ॥ स
कलपापनेवरजी ॥ करजोडीकहेकुंवर
जी ॥ गुरुसूरिराजेंद्र ॥ गेमीकुमताना
रीरे ॥सीतल०॥६॥ इतिस्तवनं ॥३१॥

॥ श्रीआवश्यक हेतु गरभीत ॥

॥ श्रीशांतीनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ जात्रीडाजात्रानवाणुंकरीएरे ॥ एदे
शी ॥ चालोसखीशांतीजिणंदनेभेटवाँ

रे॥भवभवनांदुखमांमेटचांरे ॥ चालो सखीशांती० ॥आंकणी॥ चैत्यवंदनावि धिशुंकरीएरे ॥ महानीसीथवचनाचित्त धरीएरे॥ भलीभावनाविधिअनुसरीए रे ॥ करीइरीआवहीपापहरीएरे ॥ चा लो०॥१॥ पछीतीनखमासमणादीजेरे ॥ चैत्यवंदनहरिथइकीजेरे ॥ भावजिनव रइहांवंदीजेरे ॥ नरभवनोलाहोलीजे रे ॥ चालो०॥२॥ कालतीनभावजिन वंदीरे ॥ उभाथाओपापनीकंदीरे ॥ क होअरिहंतचेइआनंदीरे ॥ नहीमानेते जगफंदीरे॥ चालो०॥३॥ वंदनपूजअ नेसतकाररे ॥ थाओकाउसगमेमुजसा ररे॥ वंदणवतीपाठउचाररे ॥ काउसग

मेअनवआगाररे ॥ चालो०॥४॥ नव
कारकाउसगपारीरे ॥ मुलनायकथाप
नाधारीरे॥ थुइजणोप्रथमसुखकारीरे॥
पछेलोगसकहोजयकारीरे॥चालो०॥५॥
सरवलोकमेंचैत्यनीजगतीरे॥ करवाक
होपाठनीजुगतीरे ॥ दरशनशुद्धिथील
होनवीमुगतीरे॥ करोकाउसगपुरवजुग
तीरे ॥ चालो ॥६॥ सहुतीरथनीथुइकी
जेरे॥ज्ञानजगतीनेअरथजणीजेरे॥ पुख
रवरदीकाउसगतीजेरे ॥ थुइज्ञाननीइ
हजलीदीजेरे॥ चालो०॥७॥ जुंइसंभ्मा
सापुंजीनेबेसीरे ॥ कहोशक्रस्तवशुजदे
शीरे॥ वंदोमारगशुद्धगवेषीरे॥ चैत्यसा
धुनीगाथाजणेसीरे ॥चालो०॥८॥ कहो

स्तवनइहांसुनरागेरे ॥ जीमन्नावनान्न
लीविधजागेरे ॥ जयवीयरायथीन्नवन्न
यन्नागेरे ॥ जाचोसोलमाजिननेत्र्यागेरे
॥ चालोण॥ण॥ वंदनपयनेएवीधिन्नाखी
रे ॥ न्नाण्चकारइहांभेसाखीरे ॥ वलीपं
चांगीमांदाखीरे ॥ सुविहितगीतारथदी
लराखीरे॥चालो०॥१०॥ इमचैत्यवंदन
करीच्याबेरे॥ गुरुजोगतीहांजेपावेरे वि
धिपर्मीकमीजसुनमावेरे ॥ तीहांसामा
यकविधितावेरे ॥चालो०॥११॥ खमास
मणदेइ...हेएरे ॥म...माय कमुहपतीपर्मी
लहीएरे॥ ...ऊठाऊबेकहीएरे॥ न
वकारगुणीनेऊचरीएरे ॥चालो०॥१२॥
इरीच्यावहीपर्मीकमीबेसीरे ॥ सदेसाउ

ठाठएकहीसीरे ॥ एमबइसीआपनीस
रीसारे ॥ एहलं...गोविधिकरीमीरे॥
चालो० ॥१३॥ इ...विधिन
णीशुरे ॥ सूरेराजिठशा...नेवरशुंरे ॥
शुधरीतिनेअनुसारशुंरे ॥ शिवरमणी
शुंमेलाकरशुंरे ॥ चालो० ॥ १४ ॥
इतिस्तवनं ॥ ३७ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥

॥ नवीकासिद्धचक्रपदवंदु ॥ एदेशी ॥
शांतिजिणंदनीप्रतिमापेखी ॥ थाराजी
नगरनेहरे ॥ आणंदअधीकोअंगेउप
न्यो॥ वुठयोसमकितमेहुरे ॥ जिनजी॥
विधीमारगदीठप्रभुजने ॥ वीनबुंहीनधरी
तुजनेहो ॥ जिण॥ विधीमारगदीठप्रभुज

ने॥ आंकणी ॥१॥ लहीसामायकपूर्ववी
धिशुं॥ वांद्याचैत्यसंभारे ॥जोनवीवांद्या
होएपूरवे॥तोतेविधिइहांधारेरे ॥जि०॥
२॥ चैत्यवंदनशक्रस्तवसुधी ॥ करीने
चारुवांदे ॥ भगवनआयंउरझायनेसा
धु ॥ वरतेगुरुनेवांदेरे ॥जि०॥३॥ मंग
लअरथेएसहुकरीए ॥ गुरुआज्ञालइ
ठावे ॥ सामायकएप्रथमआवश्यक ॥
कारजहुवेसमभावेरे ॥जि०॥४॥ दीवस
तणाअतिचारविचारण ॥ इछामिठामि
कहीए ॥ तसउत्तरीतसपापनेटालवा ॥
अनथ्थशकतीनीरवहीएरे ॥जि० ॥५॥
सरपअग्निभयप्रमुखेचलता ॥ भागे
नहीकाउसग ॥ चिंतवीएइहांएकसोचो

वीस ॥ अतिचारोनोवर्गरे ॥जि० ॥६॥
सरधासंलेखणाबारेव्रतना ॥ पांचपांच
अतिचार ॥ पनरेकरमादाननालहीए
॥ तपनाजाणोबाररे ॥जि०॥७॥ ज्ञान
दरशननेचारित्राचरणा ॥ आठआठ
प्रतेक॥ विरीयाचारनातीनवखांण्या ॥
एकसोचोवीसछेकरे ॥जि० ॥८॥ आज
नादीवसमेंशंकाकीधी ॥ समकितमेंको
ईदोष ॥ एमसहुव्रतनादोषविचारी ॥
राखीएमनमेंनरोषरे ॥जि० ॥९॥ पारी
काउसगचोवीसछो ॥ बीजोआवशकए
ह ॥ उपगारीसामायकदरशक ॥ वंदो
धरीससनेहरे ॥जि० ॥१०॥ दोषप्रका
शवागुरुनेवांदे॥ अविनयवरज्योत्रीज॥

मुहपतीअंगपमीलेहकरीने ॥ नावेगुरु वंदीजेरे ॥जि० ॥११॥ इगामिपमीकमी ठकहीनाखे ॥ गुरुआगेसहुदोष ॥ दी वसनोदंमआपेगुरुजेहवो ॥ धारीकरे संतोषरे ॥जि०॥१२॥ प्रतिषेध्योजोका मकरेतो ॥ करवानोनहीकीधो ॥ अस दहोविपरीतपरुप्यो ॥ पमीक्कमएपरशि धोरे ॥ जि०॥१३॥ समनावेपमीकमवा माटे ॥ सामायकइहांकहीए ॥ नवका रमंगलपुरवकजाणो ॥ अतिचारपमी कमीएरे ॥ जि० ॥१४॥ चोथोआवश्य ककरीनेवांदे॥गुरुनेआणाकीधी॥आचा र्यादीकखामीनेवंदे ॥ पापनीसोधिली धीरे॥ जि०॥१५॥ नूलचूकनादोषरह्या

ते काउसगकरीनेठामे ॥ सामायककरी
काउसगठावे ॥ आलावतेंववोलीजेरे ॥
जि० ॥१६॥ चारित्राचारनीशुद्धिकवा
॥ श्वासोश्वासपचास ॥ दर्शनशुद्धिलो
गसकहीने ॥ काउसगपचवीसश्वासरे
॥ जि० ॥१७॥ ज्ञानाचारनीशुद्धिनेअ
रथे ॥ पुखरवरदीकहीजे ॥ काउसगप
चवीसश्वासोश्वासजो ॥ सिद्धनीस्तुति
तीनदीजेरे ॥ जि० ॥१८॥ एमकरणका
टवाओषधकरीने ॥ गुणधारणहीवेकी
जे ॥ वांद्याविणपचखाणनहोये ॥ पभी
लेहीवांदणादीजेरे ॥ जि० ॥१९॥ वर्ध
मानगुरुथुइपेहेली ॥ कहेपछीसहुबोले ॥
एमआवश्यकनीपंचांगी ॥ भद्रबाहुविधि

खोलेरे ॥ जि० ॥२०॥ नयनिखेपविचा
रछेबहुलो ॥ गुरुगमथीजवीजाणो ॥ सि
द्धांतलक्षकरीनेजोगे ॥करसोनखांचाता
णोरे ॥ जि० ॥२१॥ मुजमनमेंश्रीशां
तिजिणंदनो ॥ ध्यानहुवोनिशदीस ॥
विरुधश्रांचरणहोजोनमाहरे ॥ अरजी
एजगदीशरे ॥ जि० ॥ २२ ॥ संवताद्रि
चउअंकशशीमे ॥ दसमीवदिआसोज
॥ धोराजीनगरसूरिराजेंद्रनी ॥ स्तव
नाकरीधरीमोजरे ॥ जिनजी०॥ विधि
मारगदीओमुजने ॥२३॥ इति ॥३३॥



॥श्री धोराजी नगरमां शांतिनाथ म
हाराज मुलनायकजी बिराज्याछे
तेनु स्तवन ॥

॥ पुरणथयोछेखेल ॥ सजनोपुरणथयो
छेखेल॥ एदेशी ॥ शांतिनाथभगवान॥
भावेभेटचाशांतिनाथभगवान ॥ आंक
णी ॥ चालीशधनुषप्रमाणशरीरनो ॥
मृगलंछनकंचनवान ॥ भावे० ॥१॥ अ
जितसंभवप्रभुपासेबीराजे पार्श्वनाथज
गभाण ॥ भावे० ॥ २ ॥ देखोदरशस
रसशांतिको ॥ टलयोमीथ्यातीभान ॥
भावे० ॥३॥ त्रणप्रदक्षणादेइकरीने ॥
विधिएकरुंहुंध्यान ॥ भावे०॥४॥ बहोत
जातकेपुष्पमंगावी ॥ हारठवुगुलतान

॥नावे० ॥५॥ बहेकजातकेधुपउखेवी॥ आरतीकरुंहुंधाम ॥नावे० ॥६॥ हैएध रीनावनावनानावुं ॥ धोराजीनगरपु रस्थान ॥नावे०॥७॥ सकलसंघसेवक जिनजीको ॥ जादवजीकरेज्ञान ॥ ना वे०॥८॥ इतिस्तवनं ॥३४॥

॥ श्रीशांतिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सुविहीतशांतिजीणंदशोनागीरे॥ रा जतरत्नपुरीवमनागीरे ॥ प्रनुशमदमगु णनारागी॥ सखीरीजोगजुगतीहीवेजा गीरे ॥एआंकणी ॥ मनेकुमतीएभरमा योरे ॥ मोहमदनोप्यालोपायोरे॥ मन मिथ्यानंदरीकायो ॥ स० ॥१॥ मनमो हनीमायाकेलीरे ॥ दोयसुनटचोरनेमे

ठीरे ॥ चोरीअखुटखजानानीथेली ॥
स०॥२॥ मनेसुमतिएसमजायोरे॥ कुर
मतीनोछेमोछेमायोरे ॥ निजअनुभवर
सलेचखायो ॥स० ॥३॥ हीवेसंजमरंग
मांरमशुंरे ॥ प्रभुशांतिनीसेवावेहेशुंरे॥
निजघरनीआरजाकिरशुं ॥स० ॥४॥ ह
वेचतुरंगीसेनासजशुंरे॥ मोहरायनीफो
जहणशुंरे ॥ सरधानयरीनिशाणाधरा
शुं ॥स०॥५॥आतमदरपणदरशतेदेखी
रे सूरिराजेंद्रपदनेपेखीरे ॥ थाशुंधनमु
निचरणगवेखी ॥स०॥६॥ इति॥ ३५॥

॥ कलस ॥

॥ एमशांतिजिनवर॥ सकलदुखहर ॥
गाइउगुणरागथी ॥ मुलचंदसुतफुलचं

दश्रागृह ॥ पडिकमणाविधिज्ञानथी ॥
वरहेतुजुगती ॥ स्तवनजगती ॥ धार
ज्योजविजनगुणी ॥धोराजीनगरे ॥ ल
डीलीला ॥ पामशोसंपतोघणी ॥७ ॥



॥ सुगुरु पच्चीशी ॥

॥ सुगुरुपिछाणोएणीआचरणे॥ समकि
तजेहनोशुद्धजी ॥ कहेणीकरणीएकस
रीषी ॥ अहनिशधरमविशुद्धजि ॥१॥
सु०॥ निरतीचारमहाव्रतपाले ॥ टाले
सघलादोषजि ॥ चारित्रशुंलयलीनर
हेनीत ॥ चितमांसदासंतोषजी ॥ २ ॥
सु०॥ जीवसहुनाजेछेपीहर ॥ पीडेनाहिं
षटकायजी॥ आपवेदनपरवेदनसरषी
॥ नहणेनकरेघायजी ॥३॥ सु०॥ मोह
करमनाजेवशनपड्यां ॥ निरागीनिर
मायजी ॥ जयणाकरताहलुएचाले ॥
पुंजीमूकेपायजी ॥४॥ सु०॥ अरहोप
रहोदृष्टिनदेषे ॥ नकरेचलतांवातजी ॥

दूषणरहितसूझतोदेषे ॥ तेलहेपाणीजा
तजी ॥५ ॥ सु०॥ भूखतृषांपीम्ह्यांदूख
नीम्ह्यां॥ छुटेजोनिजप्राणजी ॥ तोपण
अशुद्धआहारनवांछे ॥ जिनवरआणप्र
माणजी ॥६॥सु० ॥ अरसनिरसआहा
रगवेषे ॥ सरसतणीनहिचाहजी ॥ ए
मकरतांजोसरसमिलेतो ॥ हरषनहीम
नमांहजी ॥७॥ सु०॥ सीतकालेसीतेत
नुसके ॥ उनालेरवितापजी ॥ विकट
परिसहघटअहियासें ॥ नाणेमनसंता
पजि ॥८॥सु०॥ मारेकूटेरहेउपद्रव ॥
कोइकलंकदेइशिशजी ॥ करमतणाफ
लजाणउदारपण ॥ नाणेमनमेंरीसजी
॥९॥सु०॥ मनवचकायानेजेदंभे ॥ छंभे

पंचप्रमादजी ॥ पंचप्रमादसंसारवधा
रे ॥ जांणेतेनसवादजि ॥१०॥सु०॥ स
रलसभावभावमनरूमो ॥ नकरेवाद
विवादजी ॥ च्यारकषायकरमनाकार
ण ॥ वरजेमनउनमादजि ॥११॥सु०॥
पापथानिकअढारेवरजे ॥ नकरेतासप्र
संगजि ॥ विकथामुखथीच्यारनिवारे
सुमतिगुपतिशुंरंगजि ॥१२॥सु०॥ अं
गउपांगसिद्धांतवखाणे ॥ देसुधोउपदेश
जी ॥ सुद्धोमारगचलेचलावे ॥ पंचाचा
रविशेषजी ॥१३॥सु०॥ दशविधजतिध
र्मजेभाष्या ॥ तेहनाधारणहाराजि ॥
धरमथाकिजेकिमहिनचूके ॥ जोहोवेला
खप्रकारजि ॥१४॥सु०॥ जीवतणीहिं

स्यानकरे ॥ नवदेमृषावादजी ॥ तृण
मात्रअणदीधोनलहे ॥ सेवेनाहिअब्रह्म
जि ॥१५॥सुण॥ नवविधपरिग्रहमूलन
राखे ॥ निशिभोजनपरिहारजी ॥ क्रो
धमानमायानेममतां ॥ नकरेलोभल
गारजी ॥ १६॥सु०॥ जोतिषत्र्प्रगमनि
गमनभाखे ॥ नकरावेत्र्प्रारंभजि ॥ उष
धनकरेनाभिनजोवे ॥ सदारहेनिरारंभ
जी ॥१७॥सुण॥ झाकणीशाकणीभूतन
काढे॥ नकरेहलवोहाथजि मंत्रजंत्ररा
खडीकरिने ॥ नविआपेपरमारथजी ॥
१८॥सु०॥ विचरेगामनगरपुरसघले ॥
नकरेएकणठामजी ॥ चोमासाउपरमो
मासुं ॥ नकरेएकणगामजी ॥१९॥सु०

॥ चाकरनफरपासनराखे ॥ नकरावे
कोइपासजि ॥ नावणधोवणवेसबणाव
ण॥ नकरेशरीरनीसारजी ॥२०॥सु०॥
व्याजवटावनोनामनजाणे ॥ नकरेवण
जव्यापारजी॥ धर्महाटमांहिनेबेठा॥वि
णज्येपरउपगाराजि॥२१॥सु०॥ सुगुरुत
रेश्रवरनेतारे ॥ सायरजिमजीहाजजी
॥ काष्टप्रसंगेलोहतरेजिम ॥ गुरुसंग
तियेश्राजजी ॥२२॥सु०॥ सुगुरुप्रकाश
कलोयणसरिखा ॥ ज्ञानतणादातार
जी॥ सुगुरुदीपघटश्रंतरकेरो ॥ डुरकरे
श्रंधकारजी ॥२३ ॥सु०॥ सुगुरुश्रमृत
सरिखामीले ॥ दीएश्रमरगतिवासजि
सुगुरुतणीसेवानीतकरतां ॥ मोटाबूटे

पासाजि ॥२४ ॥सु०॥ सुगुरुपच्चीसिश्र
वणेसुणीने ॥ करज्योसुगुरुप्रसंगाजि ॥
कहेजिनहरषसुगुरुपसाये ॥ शांतिहर्ष
उछरंगजी ॥ २५ ॥ सु० ॥ इतिसुगुरु
पच्चीशी ॥

॥ कुगुरु पच्चीशी ॥

॥ अथ सझाय ॥ दुहा ॥ श्री
जिनवरप्रणमीसदा ॥ लेइसदगुरुआ
धार ॥ कुगुरुतणालक्षणकहुं ॥ सुणजो
सहुनरनार ॥१॥

॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥ मनसु
द्धिसुणजोनरनार॥ हृदयमधेधरज्योल
गार ॥ पंचप्रमादजेनविछांडसे ॥ ते
गुरुकेमतरशेतारशे ॥ १ ॥ कंठलागि

नित्यन्नोजनकरे ॥ जेपरलोकथकिनव
म्हरें ॥ समिसांजथीसंथारशें ॥ते०॥२॥
दिनउग्यांविणदातणकरे ॥ मनमांसुग
पणुआदरे॥ नकरेपचखाणकादिएनोका
रशी॥ते० ॥३॥ पटियांपाम्हेसमारेकेश॥
नित्यनित्यनवाबनावेबेश ॥ मुखधोवे
जोएआरशी ॥ते०॥४॥ साकरदूधपीये
प्रन्नात॥ चावलदालजमेनित्यन्नात॥ बे
तालीशदोषजेनवटालशे ॥ते०॥५॥ स्त्री
शुंवातकरेजेधणी ॥मनमांशंकानकरेको
तणी ॥जेषटकायनवउगारशे ॥ते०॥६॥
उनोनीरनवपीयेकदा ॥सजलकुंन्नन्नरी
मुकेसदा ॥झरझरीयांपाणीठारशे ॥ ते०
॥७॥ जेमुनिरातेफानसकरे ॥ पम्हदोबां

धिखुणेउतरे ॥ लक्षअलक्षनवटालशे ॥
ते०॥८॥ वंछेमैथुनराखेदाम ॥ नामधरा
वेगौतमसाम ॥ विषयकषायजेनववार
शे ॥ते० ॥ ए ॥ दिवससारेजेलमतोल
मे ॥ रातपडेसारीपासेंरमें एकाकितेए
कहारशे ॥ ते० ॥१०॥ धवधवमारगचा
ल्योजाय ॥ ईर्यासुमतीनवजोवाय मन
मांजयनवधारशे ॥ ते० ॥११॥ जाडिबु
द्दिनेजनमोलरी ॥ हलवोहाथकरेहित
धरी ॥ सापविछुंजेउतारशे ॥ते० ॥१२॥
गाडेबोजचलावेवालि॥ वणजव्यापारक
रेमनरालि ॥ सावद्यकरणीसंभारशे ॥
ते०॥१३॥ पंचेआश्रवसेवेसही ॥ सुधे
मारगचालेनही ॥ हाथेकारिफूलफल

वधारशे ॥ते० ॥१४॥ जेमुनिराखेकांट
कांटला ॥ अकालेसेवेपाटपाटला ॥
मानवत्नवएमहारशे ॥ते०१५॥ कूमप्र
पंचकरेजेघणा॥ मनमांकांइनराखेमणा
॥ पोतेपिंमपापेन्नारशे ॥ते०॥१६॥ गुण
वंतनाअवगुणदाखवे ॥ आपतणाअव
गुणउलवे ॥ जेआधाकर्मीआहारहोरशे
॥ते०१७॥ सुरजउगेकरेस्नान ॥ धूपउ
खेवेबेसेध्यान ॥ मिथ्यासुरादेवमनधा
रशे ॥ते० ॥१८॥ एकणघरधर्मलान्नज
दिये ॥ अशनादिकआपेतेलिये ॥ बी
जेदिनतेघेरफेरहोरशे ॥ते०॥१९॥ वा
हनबेशिचालेपंथ ॥ नामधरावेछेनिग्रंथ
॥ इमश्रीजिनशासनलजावशे ॥ ते०॥

२०॥ वेचातालेइचेलाकरे ॥ विनवैरा
गेचारित्रनचरे ॥ नविजननाबोधबीज
केमठारशे ॥तेण॥२१॥ मातपितानाबा
लकजेह ॥ तेहनेवियोगपमावेतेह ॥ ते
हथकीदुरगतिपामशे ॥ते० ॥२२॥ सघ
लीपरवीवहोरेवीगे ॥ जमणवारदेखी
मनरगे ॥ नावदेहरेदेवनजुवारशे ॥
ते० ॥२३॥ कुगुरुतणालक्षणछेअनंत ॥
कहेतांकेमहिनआवेअंत ॥ कुगुरुतणी
संगतजेचालशे ॥ तेसंसारनवोनवहा
रशे ॥२४ ॥ श्रीआणंदविमलसूरीगुरु
राज ॥ पंचमआरेदीठोआज ॥ तेहत
णाल्इयेसुपसाय ॥ नणेतेजपालसुख
दाय ॥२५॥ इतिकुगुरुपच्चीशी ॥

॥ सम्यक्त उचरवानो आलावा
सहित उपदेश ॥

कोइ कहेछे के अमने गुरु करी ले ए सम्यक्त छे एम कहे ते मृषावादी केमके एहवो सम्यक्त कोइ सूत्रमां कह्यो नथी महावीरस्वामीए पण कह्योछे के जे माहरी आणामां चाले के वली वचन प्रमाणे बोले ते माहरा जेहवोज छे ए आचारांग सूत्रमां कह्युं एहवो चाले तेहज मुनि पण पोतेज गुरु बीजा नथी एम न कहिवो केम कें निश्चे सम्यक्त तो ए आत्माज गुरु देव ने धर्म छे अने व्यवहार सम्यक्त तो देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ दया

मूल धर्म ए सिवाय अन्यनो त्याग ते व्यवहार सम्यक्त तथा कोइ कहे सम्यक्त उचरवो मिथ्यात्वनो त्याग करवो ते कांइ सम्यक्त नथी सम्यक्त तो आत्मामां छे एम बोलनारो ते व्यवहार लोपी छे सर्व शासननो नाश करनारो महा पापी छे केमके श्रावकना बे भेद छे एक अविरती सम्यक्तदृष्टी बीजो देशविरती तेमां जे सम्यक्त उचरे अने मिथ्यात्वनो त्याग करे बीजुं कांइ पण पच्चखाण न करे ते अविरते सम्यक्तदृष्टी अने निलवण प्रमुख त्याग करे ते देशविरती अने जे देव प्रमुख त्याग नथी करता तेहुने सम्य

क्त छे ते निश्चे रूप छे तेनो इहां कथ
न नथी पण मनुष्य नवमां तो विशे
ष व्यवहार प्रधान छे निश्चे ते गौण
मां रहे छे केमके आवश्यक प्रमुख ग्रं
थोमां सम्यक्त उचरवानो पाठ ते इमछे
॥समणोवायउ पुव्वामेवमिछतांउ पडि
क्कमितिसम्मतं उवसंपज्जित्तिणोसेकप्प
त्ति अज्जप्पभित्तिं अन्नउत्थिएवा अ
ण्णउछियदेवयाणिवा अण्णउत्थियपरि
ग्गहियाणि वाचेतियाणिवांदित्तएवा न
मंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तेणं आल
वित्तएवा संलवित्तएवातेसिं असणंवा
प्रदातुंवा अणुप्पदातुंवाणण्णछरायाभि
ओगेणं बलाभिओगेणं गणाभिओगेणं

देवयाभियोगेणं गुरुनिग्रहेणं वित्तीकं तारेणं ए पाठ ॥ आवश्यक चूर्णिमां तथा पंचाशक टीकामां तथा उपधान प्रकरणमां नंदी प्रमुख विधि सहीत उचरवानो लखे छे माटे सम्यक्त उचरवानो ना नथी कोइ कहे सम्यक्त उचरे पणी कुगुरुने दाक्षिण्यपणा माटे पण न नमवो कपटाइ थाय केमके उपरथी नमे मनमां कपट ते माटें एह कहिवो अजुक्त छे केमके गुरुबुद्धिए न नमे संसार व्यवहारि नमे ते कपटाई नथी ॥ इति ॥

—❧❦—

अनुक्रमणिका.

जाहेर खबर.

सरवे जैनी बंधुओने खबर आपवामां आवे छे के नीचे लखेली चोपडीओ नीचे लखेला ठेकाणेथी मलशे. टपाल खरच जुदु पडशे.

रसीक स्तवनावली कीमत ०-२-६	शा० अमीचंद जेठासा डा. पांजरापोल तथा शा० हीराचंद ककलभाइ मांडवीनी पोलमां नागजी भुदरनी पोलमां अमदावाद.
देवसी राइ पडीकमणा सूत्र. कीमत ०-४-० समकीतनी पूजा. कीमत ०-५-०	लखमीचंद जेठासा अमदावाद डा. पांजरापोल.